International Journal of Information Movement *Vol. 8 Issue V* *(September)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages** **11-14**

वर्तमान समय में प्रेमचन्द के साहित्य की प्रासंगिकता

भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
गुरूकुल कांगडी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उतराखण्ड)
Email-id:- bhartisharma5664@gmail.com

1.0 भूमिका

वर्तमान समय में प्रासंगिकता से तात्पर्य पूर्ववर्ती कृतियां कृतिकार के सामाजिक, नैतिक दृष्टिकोण का विवेचन करना है। वैसे तो प्रासंगिकता शब्द का प्रयोग समसामयिक साहित्य के संदर्भ में किया जा सकता है लेकिन पूर्ववर्ती रचना के विवेचन में भी इसका योगदान महत्वपूर्ण है। जब भी किसी लेखक या रचनाकार की रचना के विषय में प्रासंगिकता पर विचार किया जाता है तो इसका मुख्य कारण वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों की गिरावट से है। आज का समाज बड़ी तेजी से बदल रहा है। रहन-सहन, विचार सभी स्तर पर मनुष्य के सोचने-समझने में परिवर्तन होता जा रहा है और इसका सही मूल्यांकन प्राचीन को वर्तमान के साथ जोड़ कर किया जा सकता है। यही बात साहित्यिक रचनाओं पर भी लागू होती है जो भी कृति अपने आपको वर्तमान से जोड़ कर नहीं रख पाती, उसे समाज द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाता है। ''वर्तमान या आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता निर्धारित करने के लिए वर्तमान अन्तर्विरोधों को भी वर्णित किया गया है। धार्मिक संस्कृति और आज की पूंजीवादी संस्कृति से शन्य हो रहे समाज में गूणात्मक परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण प्रेम, विश्वास, आस्था मानव को भयभीत करने लगे हैं'' यहां पर वर्तमान समय में प्रेमचन्द के साहित्य की प्रांसगिकता पर विचार प्रस्तुत किए गये हैं।

2.0 **साहित्य का उद्देश्य**

प्रेमचन्द ने साहित्य के उद्देश्य पर अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा है कि - ''साहित्य उस रचना को कहा जाता है जिसमे कोई सच्चाई प्रकट की गई हो जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं सुन्दर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर ड़ालने का गुण हो।''[प] साहित्य में तत्कालीन समाज का वर्णन किया जाता है और साहित्यकार भी अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं का अपनी रचना में उल्लेख करता है। साहित्यकार के सामने आजकल जो आदर्श रखा जाता है उसी के अनुरूप वह व्यक्ति को समाज से अलग न देखकर उसका एक अंग मानता है।

इस बात में सन्देह नही है कि साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता। लेकिन हम जिझासा और शिक्षा को बढ़ावा दे तो निश्चित रूप से हम साहित्य में अपना योगदान दे सकते हैं।
साहित्यकार अपने देशकाल व वातावरण से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में चलती है तो साहित्यकार उससे विशेष रूप से प्रभावित होता है। वह अपनी कृति को उन घटनाओं तथा स्थितियों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

3.0 **प्रेमचन्द का साहित्य संबधी दृष्टिकोण**

प्रेमचन्द प्रगतिशील साहित्यकार थे। इन्होंने अपने साहित्य में कलावाद को कोई स्थान नहीं दिया। वे साहित्य का वास्तविक जीवन में अविच्छिन्न सम्बंध मानते थे। जीवन का आधार साहित्य है, साहित्य जीवन से कटकर अपना महत्व खो देता है। जीवन के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण महान है। प्रेमचन्द का कथन है- ''जीवन का उद्देश्य ही आनंद है। मनुष्य जीवन पर्यन्त आनन्द ही की खोज में पडा रहता है।[पप]
जब समाज में जीवन स्तर गिरने लगता है तो साहित्यकार का कर्तव्य बनता है कि वह जीवन की आलोचना करे। साहित्य का उद्देश्य जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करना है, जिसे पढ़कर पाठक अपने जीवन में आने वाली समस्याओं के प्रति जागरूक हो सकें। साहित्यिक आदर्शों के प्रति प्रेमचन्द लिखते है-''किसी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान सम्पति

उसके साहित्यिक आदर्श होते हैं। ब्यास और वालमिकी ने जिन आदर्शों की सृष्टि की, वह आज भी भारत का सिर उंचा किए हुए है। राम अगर वालमिकि के सांचे में न ढ़लते तो राम न रहते, सीता भी उसी प्रकार सांचे में ढलकर सीत हुई।[पपप]
प्रेमचन्द साहित्य में आदर्श को मानवीय उत्थान का साधन मानते है तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करते हैं।

प्रेमचन्द द्वारा भारतीय समाज को शिक्षा

हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द का योगदान विस्मरणीय है। प्रेमचन्द मनुष्य के उन आदर्शों को महत्व देते थे जिनमें से मानवता के उच्च मूल्य प्रस्फुटित होते हैं। प्रेमचन्द ने समाज के प्रत्येक वर्ग का यथार्थ चित्रण किया। यही कारण है कि उनके उपन्यासों का फलक विराट है। समाज का प्रत्येक वर्ग उनके उपन्यासों में स्पष्ट रूप से उभरकर हमारे सामने आता है। प्रेमचन्द ने जिस सामाजिक परिवेश को अपनी कृति का विषय बनाया, वह भली-बुरी रूढियों से भरा हुआ था। वे ऐसे झूठे आदर्शों का भांडा फोड़ना चाहते थे और नवीन आदर्शवादी तथा यथार्थवादी मूल्यों की स्थापना के पक्षधर थे।

प्रेमचन्द के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने अपनी कृतियों में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। 1918 में देश की जो स्थिति थी, जब सेवासदन का प्रकाशन हुआ तो उसमें स्पष्ट रूप से दिखाया गया कि समाज में नारी की क्या स्थिति है उसे केवल भोग-विलास की वस्तु समझकर फेंक दिया जाता है। निर्मला उपन्यास में दहेज प्रथा का मुद्दा उठाया गया है। कैसे दहेज के अभाव में निर्मला का विवाह 40 वर्षीय विधुर जो तीन बच्चों का पिता है, तोताराम से कर दिया जाता है। सेवासदन उपन्यास में भी सुमन का विवाह विधुर गजाधर के साथ इसलिए कर दिया जाता है क्योंकि उसकी माता के पास देने के लिए दहेज नहीं है और अच्छे संस्कार में पली बढ़ी सुमन धन पाने की लालसा में वेश्या बन जाती है। सुमन के माध्यम से लेखक ने दहेज प्रथा को वेश्यावृति का मूल कारण माना है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से इस समस्या का उन्मूलन युवक-युवती के परस्पर प्रेम, लडके लडकियों की दहेज विरोधी दृढ़ संकल्प आदि के द्वारा ही किया जाता है।

लेकिन वर्तमान समय आज स्थिति बदल गई है। प्रेमचन्द द्वारा बताए उपाय से इन समस्याओं में कमी लाई जा रही है। स्वयं प्रेमचन्द ने अपने जीवन में विधवा शिवरानी देवी से विवाह करके अपनी कथनी-करनी को एक किया था। प्रेमचन्द युग में समाज में विधवा नारी की स्थिति बहुत शोचनीय थी क्योंकि उस समय तक शारदा एक्ट लागू नही हुआ था और न ही विधवा पुनर्विवाह का चलन था। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के माध्यम से विधवा स्थिति का जो मार्मिक चित्रण किया वह दिल को दहला देने वाला है। गबन उपन्यास की नायिका रतन के शब्दों में-''अगर ईश्वर नहीं है तो उसके यहां कोई न्याय होता है, एक दिन उसी के सामने उस पापनी से पूछूंगी, क्या तेरे मां बहिने नहीं थी जो उन्हें लज्जा ना आयी।''[पअ] दूसरी तरफ जोहरा नाम वेश्या के माध्यक से प्रेमचन्द ने पुलिस तंत्र का भांडाफोड भी किया है आज के समय में भी महानगरों में जो वेश्यावृति के स्थल हैं वे सभी पुलिस की नाक के नीचे फल-फूल रहे हैं।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के माध्यम से वेश्यावृति के मूल कारणों पर प्रकाश ड़ाला है बल्कि उनके उन्मूलन के उपाय भी बताए हैं। डॉ0 बच्चन सिंह का कथन है- ''यह प्रेमचन्द का आदर्शवाद है वे समाज की विकृतियों को दो समाधान प्रस्तुत करते है- एक सेवासदन की स्थापना और स्वस्थ विवाह।[अ]
सेवा सदन के माध्यम से प्रेमचन्द ने सामाजिक कृप्रथाओं को दूर कर परिवार को व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है तो दूसरी तरफ प्रेमाश्रम में प्रेम के माध्यम से हृदय परिवर्तन द्वारा समाज की आर्थिक विषमताओं को हटाकर रामराज्य की स्थापना का सपना देखा है।

भारतीय समाज में प्रेमचन्द का योगदान

भारतीय समाज के सन्दर्भ में प्रेमचन्द के साहित्य में प्रासंगिकता की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। प्रेमचन्द जिस युग में साहित्य रचना कर रहे थे उस समय देश में छोर निराशवाद का बोलबाला था। किसानों की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। नारी को भी समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से मानव की एकता, प्रेम के विभिन्न रूप, विश्वास, श्रृद्धा, आस्था की बात उस तत्कालीन समय से कहीं अधिक दर्शायी है जो आज के वर्तमान सम मे और भी अर्थवान और प्रासंगिक हो उठे है। प्रेमचन्द ने उपेक्षित मानव की स्थितियों तथा उनकी भावनाओं को जिस प्रकार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है वे विशेष स्मरणीय है।

प्रेमचन्द के लेखन के दौरान भारत में सामंतवाद का स्थान पूंजीवाद ले चुका था। महाजनी सभ्यता उदय हो चुकी थी। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पूरे जोरों-शोर से कार्य कर रहा था तभी प्रेमचन्द ने आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी से अपनी यात्रा शुरू की तथा भारतीय जनता को जागने का प्रयास किया। प्रेमचन्द ने साहित्य का प्रयोजन में मनोरंजन को स्थान तो दिया है लेकिन केवल इसलिए जिससे हमारी पवित्र को यथार्थ जीवन से जोड़कर समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द ऐसे गम्भीर लेखक थे जिन्होंने अपने सामाजिक दायित्व को अच्छे से निभाया और समाज को साहित्य से जोड़ा। स्वयं प्रेमचन्द के शब्दों में-

''साहित्य का मूलाधार सत्य, सुन्दर और शिव है। साहित्य की सामग्री मनुष्य का जीवन है। कभी-कभी चर और अचर जीवन भी साहित्य का जन्म उपयोगिकता की भावना का ऋणी है''।[अप]

प्रेमचन्द ने जिस समय साहित्य में प्रवेश किया, उस समय देश के अन्दर नव जागरण की हल्की सी लहर शुरू हो चुकी थी, जो उनके उपन्यासों में भी लक्षित होती है। प्रेमचन्द ने भारतीय जीवन तथा उनकी समस्याओं को नजदीकी से देखा तथा भोगा यही कारण है जो ग्रामीण जन-जीवन का इतना सशक्त चित्रण उनके साहित्य में हुआ है।

प्रेमचन्द यह मानते थे कि व्यक्ति अकेला सब कुछ नहीं कर सकता उसे समाज के साथ मिलकर चलना होता है इसी कारण उनके उपन्यासों मे चित्रित जीवन संघर्ष व्यक्ति के बीच का नहीं, बल्कि दो परस्पर विरोधी सामाजिक प्रवृतियों का है।[अपप]

4.0 **प्रेमचन्द का वर्तमान समय मे मूल्यांकन**

प्रेमचन्द काल में पूंजीवादी व्यवस्था अपनी जड़े जमा चुकी थी। अंग्रेज तथा भारतीय दोनो बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां और मिलें खोलने के लिए प्रयत्नशील थे। चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोल-बाला था। अंग्रेज भी नील की खेती के बहाने गांवो में जाकर बस गये थे और किसानों का शोषण कर रहे थे तो दुसरी तरफ अंधविश्वास, लूटखोरी, भ्रष्टाचार चारो तरफ फैला हुआ था। प्रेमचन्द ने इस सब समस्याओं को दूर के अथक प्रयास किए तथा समाज को जागृत भी किया। प्रेमचन्द ने जोर देकर कहा कि एक लेखक के प्राकृतिक उपहारों को उसके आस-पास की दुनिया के बारे में शिक्षा द्वारा जागृत किया जा सकता है। उन्होंने अपने आगे आने वाले लेखकों को सन्देश दिया कि वे अपने लेखन में व्यक्तिगत चिन्ताओं की बजाय सार्वजनिक और राजनीतिक भूमिकाएं लेते हुए सामूहिक आवाज में बात करें। साहित्य, जो अब तक मनोरंजन या सामूहिक रूप से अन्याय के उपर लिखता आ रहा था, उसे अब समय की आवश्यकताओं को देखते हुए मानव ज्ञान और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करने की जरूरत है।

प्रेमचन्द का जितना महत्व स्वतंत्रता पूर्व युग के दौरान था वे आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उनका साहित्य, उनके द्वारा लिखे गये चरित्र, वे आज भी हमें जीवन संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं। जातिगत भेदभाव हो या साम्प्रदायिकता ये चीजें आज भी वर्तमान समाज में व्याप्त हैं। इनका 'गोदान' उपन्यास आज भी नये परिप्रेक्ष्य में उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रेमचन्द की कफन कहानी आज भी हमें प्रेरित करती है। नारी की दशा को जो चित्रण प्रेमचन्द ने अपने समय में किया है उससे प्रेरणा लेते हुए वर्तमान समय में नारी स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया है। आज नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ये आगे आयी हैं।

वर्तमान समकालीन साहित्य-विमर्श में आज भी प्रेमचन्द का लेखन 'बीज' रूप में मौजूद है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रेमचन्द जब साहित्य में समाज में व्याप्त समस्याओं को लेकर आए तब इस बारे में किसी का भी ध्यान नही गया था। हिन्दी-उर्दू की विरासत से बहुत कुछ लेकर प्रेमचन्द ने अपनी साहित्य पद्धति का विकास किया। आरंभ में नारी का शोषण इन्होंने आर्य समाज से ग्रहण किए। अपने अभावों और संघर्षो से भरे जीवन की कठिनाइयों से जूझते हुए जनजीवन को साहित्य से जोड़ने का भरसक प्रयास प्रेमचन्द ने किया। उनका सपना भारत को सभी रूढ़ि से मुक्त करवाकर आदर्शवाद की स्थापना करने का था। उनके विचारों से आज भी वर्तमान समय मे लोग प्रेरित हो रहे हैं। साहित्य में आज भी वे आदर्श की तरह पूजे जाते हैं। उन्होंने भारतीय गद्य साहित्य में उनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। प्रेमचन्द की सर्जना और विचारों से आज भी भारतीय समाज प्रेरित हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रेमचन्द, साहित्य का उद्देश्य, एस.के. पब्लिशर्ज, नई दिल्ली
2. प्रेमचन्द, गोदान, भारती भाषा प्रकाशन
3. डॉ. महेन्द्र भटनागर, समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द, ज्ञान भारती नई दिल्ली
4. डॉ. तुलसी नारायण सिंह, प्रेमचन्द के उपन्यास, अध्ययन पब्लिशर्स नई दिल्ली
5 डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन
6 प्रेमचन्द, गबन, भारती भाषा प्रकाशन
7 प्रेमचन्द, कुछ विचार
8. डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा

---

[i] प्रेमचन्द, साहित्य का उददेश्य

[ii] प्रेमचन्द, कुछ विचार, पृ0 सं0 /73

[iii] डॉ0 महेन्द्र भटनागर, प्रेमचन्द की साहित्य सम्बन्धी मान्यताएं पृ0 सं0 /25

[iv] प्रेमचन्द, गबन:

[v] डॉ0 बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास।''

[vi] तुलसी नारायण सिंह, प्रेमचन्द के उपन्यास, पृ0 सं0/6

[vii] डॉ0 तुलसी नारायण सिंह, प्रेमचन्द के उपन्यास, पृ0 सं0 /6